कुलुस्सियों

1 पौलुस, जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु
मसीह का प्रेरित है, और भाई तीमुथियुस
की ओर से 2 कुलुस्से में रहने वाले मसीह
में पवित्र और विश्वसनीय लोगों को हमारे
स्वर्गिक पिता परमेश्वर से असीम कृपा तथा
शान्ति मिले।

3 हम प्रभु यीशु मसीह और उनके पिता को
धन्यवाद देते हैं और तुम्हारे लिए बिनती
करने में लगे हुए हैं। 4 हम ने तुम्हारे उस प्रेम
के विषय जो सब पवित्र लोगों के लिए है
और उस विश्वास के बारे में जो मसीह यीशु
में है, सुना है। 5 यह उस आशा के कारण है
जो तुम्हारे लिए स्वर्ग में रखी हुयी है। तुमने
इस आशा के विषय में सुसमाचार के सत्य
वचन द्वारा पहले ही से सुना था। 6 जो वचन
पहले तुम्हें दिया गया है, जिसे अन्य लोगों को
भी दिया गया, उसका दुनिया में असर दिख
रहा है। जब से तुमने इस सुसमाचार को सुना
और सच में परमेश्वर की असीम दया को
जाना है, यह तुम में भी बढ़ता जा रहा है।
7 इस आशा के बारे में तुमने इपफ्रास से सुना
था, जो हमारा सहकर्मी और विश्वास रखने
लायक सेवक है। 8 उसने पवित्र आत्मा में
तुम्हारे प्रेम के विषय हमें बताया है।

9 इसी कारणवश, हम ने भी जिस दिन
से यह सुना है, तुम्हारे लिए लालसा करने
और प्रार्थना में नहीं चूकते, ताकि तुम यीशु
की इच्छा की पहचान में जो पूर्ण ज्ञान
और आत्मिक समझ के साथ है, भरपूर
होते जाओ। 10 तुम्हारा चालचलन यीशु को
पसन्द आने वाला हो, हर अच्छे काम
में फलदायक हो और परमेश्वर के ज्ञान
में बढ़ते हुए उन्हें हर बात में खुश करो।
11 परमेश्वर की तेजोमय शक्ति से मज़बूती
पाकर, आनन्द के साथ पूरी सहनशीलता
और धीरज से स्वर्गिक पिता को धन्यवाद
देते रहो। 12 परमेश्वर का धन्यवाद करते
रहो जिन्होंने हमें इस लायक बनाया कि
पवित्र लोगों के साथ रोशनी में, मीरास में
हिस्सेदार हो सकें। 13 क्योंकि परमेश्वर ही ने
हमें अन्धकार के राज्य पर शासन करने वाले
से आज़ाद किया है. और वही हमें अपने प्यारे
बेटे के राज्य में लाए हैं 14 परमेश्वरने हमें
यीशु के खून के द्वारा आज़ादी और अपराधों
की माफी दी है।

15 वह अदृश्य याहवे के प्रतिरूप और
सारी सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ हैं। 16 उन्हीं के द्वारा
सब कुछ, चाहे वह स्वर्ग का है, या पृथ्वी
का, दिखने वाला या न दिखने वाला, चाहे
राजासन या राज्य या प्रधानताएँ या शक्ति,
सब कुछ उन्हीं के द्वारा और उन्हीं के लिए
बना है। 17 वह सृष्टि से पहले थे और उन्हीं के
द्वारा सब कुछ संभाला जाता है। 18 वह देह
अर्थात् चर्च के सिर हैं, वही शुरूआत और
मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहलौठे[a]
हैं, ताकि हर बात में सर्वश्रेष्ठ हों। 19 इसलिए
स्वर्गिक पिता को यह पसन्द आया कि सारी
भरपूरी यीशु में निवास करे। 20 और चाहे

[a] **1.18** प्रथम

पृथ्वी की, चाहे स्वर्ग की, उन्होंने सभी का
मेल यीशु के क्रूस पर बहे खून के द्वारा स्वयं
से करा लिया।
21 तुम भी एक समय अपने बुरे कार्यों द्वारा
मन में बिछड़े हुए और दुश्मन थे, 22 लेकिन
यीशु ने अपने माँस-लोहू की देह में तुम्हें
किसी भी बदनामी से बढ़ कर अपनी निगाह
में पवित्र और निर्दोष प्रस्तुत करने के लिए
अब तुम से मेल कर लिया है, 23 यदि तुम
विश्वास में स्थिर होते जाते, जड़ पकड़ते
और जो सुसंदेश तुमने सुना है, उसकी आशा
रखते हो, जिसे इस आकाश के नीचे प्रत्येक
प्राणी को दिया गया, और जिस का मैं पौलुस
सेवक भी बना।
24 अब मैं उन दुखों[a] के कारण आनन्दित हूँ,
जो तुम्हारे लिए मुझे होते हैं और मसीह के
दुखों[b] की कमी उनकी देह अर्थात् चर्च के
लिए अपनी देह में पूरी कर देता हूँ। 25 तुम
गैर यहूदियों को अपना संदेश पूरी भरपूरी
के साथ देने के द्वारा परमेश्वर ने मुझे चर्च
की सेवा करने की ज़िम्मेदारी दी है। 26 ऐसा
उस रहस्य के कारण है, जो युगों से छिपा
था, लेकिन अब उनके पवित्र लोगों पर प्रगट
हुआ है। 27 परमेश्वर ने बताना चाहा कि
गैर-यहूदियों में कीमती महिमामय रहस्य क्या
है। वह रहस्य यह है कि मसीह, जो महिमा
की आशा हैं, हम में रहते हैं। क्योंकि यह एक
भेद है: यीशु तुम में हैं और तुम्हारा यह भरोसा
भी है कि तुम उनकी महिमा के हिस्सेदार
बनोगे।
28 इसलिए हम उपदेश और चेतावनी देते
हैं और सारे ज्ञान सहित हर एक मनुष्य को
सिखाते हैं, ताकि प्रत्येक व्यक्ति को[c] मसीह
यीशु[d] में सिद्ध उपस्थित करें। 29 इसी लक्ष्य
के कारण उनकी सामर्थ के अनुसार, जो मुझ
में शक्तिशाली रीति से काम कर रही है, तन
मन लगा कर मेहनत करता हूँ।

2 जिन्होंने मेरा मुँह नहीं देखा है और जो
लौदीकिया में हैं, उन्हें मैं यह बताना
चाहता हूँ, कि तुम्हारे लिए मुझे कितना
अधिक संघर्ष करना पड़ता है। 2 तुम प्रेम से
आपस में गठ कर अपने मन में प्रोत्साहित हो,
ताकि समझ के पूरे आश्वासन की दौलत
और परमेश्वर पिता और यीशु मसीह के
रहस्य के पूरे ज्ञान में प्रवेश कर सको। 3 यीशु
मसीह में बुद्धि और ज्ञान का सारा खज़ाना
छिपा हुआ है। 4 मैं यह इसलिए कहता हूँ,
ताकि भरमा देने वाले शब्दों से तुम्हें कोई
धोखा न दे सके। 5 हालाँकि मैं देह में तुम्हारे
साथ नहीं हूँ, फिर भी मैं आत्मा में तुम्हारे साथ
हूँ। मैं मसीह में तुम्हारे मज़बूत विश्वास की
स्थिरता और अनुशासन को देख कर खुश
हूँ।
6 इसलिए, जैसे तुमने प्रभु यीशु मसीह को
अपना मान कर स्वीकार कर लिया है, उसी
तरह आगे बढ़ते जाओ। 7 जैसा तुम्हें सिखाया
गया है, विश्वास में मज़बूती पकड़ते, जड़
पकड़ कर मज़बूत होते हुए धन्यवाद में
उमड़ते चलो।
8 सावधान रहना, ताकि तुम्हें कोई
दर्शनशास्त्र और खोखले धोखे से, जो
मनुष्य की परम्परा और संसार के शुरूआती
ज्ञान पर आधारित है परन्तु मसीह पर नहीं,
बर्बाद न कर दे।
9 मसीह में परमेश्वर की सारी भरपूरी
दैहिक रीति से वास करती है। 10 जो सारी
प्रभुसत्ता और अधिकार के प्रधान हैं, उन में
तुम पूरे[e] किए गये हो। 11 उन्हीं में तुम्हारा ऐसा
खतना हुआ है, जो हाथ से नहीं होता है, यह

[a] **1.24** सताव [b] **1.24** सताव [c] **1.28** परमेश्वर के सामने [d] **1.28** के साथ रिश्ते [e] **2.10** भरपूर

मसीह द्वारा किया गया आत्मा का खतना है,
जिस में अपराधों का शरीर हटा दिया जाता
है। 12 और तुम बपतिस्मे में मसीह के साथ
गाड़े गए, उन्हीं में परमेश्वर की सामर्थ के
द्वारा विश्वास से जिलाए भी गए, जिन्होंने
यीशु को मरे हुओं में से जिलाया है।
13 तुम अपने अपराधों और अपनी देह की
कमियों में मरे हुए थे, उन सारे अपराधों को
क्षमा करते हुए परमेश्वर ने यीशु के साथ
तुम्हें भी जिलाया। 14 वह लेखा जिस में हमारे
विरोध में आरोप साबित हो चुके थे, उन
सब को यीशु ने क्रूस पर ठोंक कर दूर कर
दिया और पूरी तरह से मिटा दिया। 15 यीशु
ने प्रधानताओं[a] और शक्तियों[b] को लूट कर,
क्रूस द्वारा उन पर जीत हासिल करके उन
सभी का सरेआम तमाशा बनाया, और क्रूस
के कारण उन पर जयजयकार सुनाई।
16 इसलिए खाने-पीने, त्यौहार मनाने, या
नये चाँद को मानने या सब्त के सम्बन्ध
में तुम्हारे लिए कोई दूसरा व्यक्ति फैसला
न करे। 17 ये सभी आने वाली बातों की
एक छाया हैं, सब से अधिक महत्व की
बात यीशु हैं। 18 स्वयं की दीनता, स्वर्गदूतों
की उपासना, देखी हुई बातों और अपने
शारीरिक मन के द्वारा बेकार में घमण्ड से
भरने के द्वारा तुम्हें कोई तुम्हारे ईनाम से
अलग न रखे। 19 ऐसा व्यक्ति उस सिर
अर्थात् यीशु को पकड़े नहीं रहता, जिस से
सारी देह[c] जोड़ों और तन्तुओं के द्वारा पाली
पोसी जाकर एक होकर परमेश्वर से उन्नति
पाती जाती है।
20 क्योंकि यदि शुरुआती बातों के लिए
तुम मसीह के साथ मर गये, तो संसारिक
लोगों की आज्ञा और सीख के मुताबिक, उन
नियमों के गुलाम क्यों बनते हो? 21 जैसे कि
यह मत छुओ, वह मत चखो, इन बातों पर
अमल मत करो। 22 ये सभी बातें जो मनुष्यों
की आज्ञाओं और सिद्धान्तों के अनुसार हैं
उपयोग के साथ नाश हो जाने वाली हैं। 23 इन
बातों में ज्ञान के दिखावे के साथ अपने चुने
हुए भक्ति के तरीके, झूठी दीनता और देह
को कष्ट देना है, ये बातें शरीर की लालसाओं
को नहीं रोक पाती।

3 इसलिए कि तुम मसीह के साथ जिलाए
गए हो, तो स्वर्गिक वस्तुओं को चाहो,
जहाँ परमेश्वर के अधिकार के साथ मसीह
हैं। 2 दुनिया की नहीं परन्तु स्वर्ग की वस्तुओं
पर ध्यान लगाओ। 3 क्योंकि तुम पिछले
जीवन के लिए मर चुके हो और मसीह द्वारा
परमेश्वर में तुम्हारा आत्मिक जीवन छिपा
हुआ है। 4 जब यीशु जो हमारा जीवन हैं
दिखाई देंगे, तब तुम भी उनके साथ बड़े तेज
में प्रगट होगे।
5 इसलिए इस पृथ्वी पर जो तुम्हारी
शारीरिक लालसाएँ हैं, जैसे यौन कामुकता,
अशुद्धता, बुरी लालसा और लालच[d], इन
सब को मार डालो। 6 इन्हीं कारणों से
स्वर्गिक पिता का क्रोध उनकी आज्ञा न
मानने वालों पर आता है। 7 एक समय था,
जब तुम इन सब में जी रहे थे और अपना
सारा समय इन्हीं में गवाँ रहे थे। 8 किन्तु
अब तुम्हें ये सभी बातें अर्थात् क्रोध, रोष,
कड़वाहट, निन्दा, मुँह से निकलने वाली
गंदी बातें दूर कर देनी चाहिए। 9 एक दूसरे
से झूठ मत बोलो, क्योंकि तुमने अपना
पुराना जीवन उसके कामों सहित दूर
कर दिया है। 10 तुमने अब नया जीवन
शुरू किया है, जो परमेश्वर की समानता
के ज्ञान में नया होता जाता है। 11 जहाँ

[a] **2.15** दुष्ट शासकों [b] **2.15** अधिकारियों [c] **2.19** चर्च [d] **3.5** जो मूर्तिपूजा है

यूनानी-यहूदी, खतनासहित-खतनारहित, बारबेरियन-स्कूती, गुलाम-आज़ाद में कोई अन्तर नहीं है। मसीह सब बातों में सब से बढ़ कर हैं और वह हम सब में रहते हैं।

12 इसलिए परमेश्वर के चुने हुओं की तरह
पवित्र और बहुत प्रिय लोगो, अपने आप
को कोमल करुणा, मन की दीनता, नम्रता
और धीरज से ढाँक लो। 13 यदि किसी से
झगड़ा हो जाए, तो एक दूसरे की सह लो
और माफ़ करो। जिस तरह से मसीह ने तुम्हें
माफ़ किया, तुम्हें भी एक दूसरे को करना
चाहिये। 14 इन सभी बातों से अधिक, अपने
आप को प्रेम से ढाँक लो, जो सिद्धता का
कमरबंद है।
15 मसीह की शान्ति, जिस के लिए तुम्हें
इस देह में निमंत्रण दिया गया है, तुम्हारे
मन में शासन करे। उन्हें सदा धन्यवाद देते
रहो। 16 मसीह का वचन सारी बुद्धिमानी के
साथ और बहुतायत से तुम में बना रहे, यीशु
के लिए अपने मन में गाते हुए भजन और
आत्मिक गीतों द्वारा एक दूसरे को सिखाते
और समझाते रहो। 17 बोल-चाल और जो
काम किया जाए, सब कुछ प्रभु यीशु के
नाम में हो और उन्हीं के द्वारा परमेश्वर को
धन्यवाद देते हुए करो।
18 पत्नियो, अपने पतियों की बात मानो,
क्योंकि यह यीशु को पसन्द है।
19 पतियो, अपनी पत्नियों से प्यार करो
और उनके साथ कठोरता का व्यवहार मत
करो।
20 बच्चो, सभी बातों में अपने माता-पिता का
कहना मानो, क्योंकि इस से यीशु को आनंद
मिलता है।
21 बच्चे वालो, अपने बच्चों को चिढ़ मत
दिलाओ, कहीं वे अपनी हिम्मत न खो दें।
22 सेवकों, संसारिक रीति से जो तुम्हारे
मालिक हैं, हर बात में उनके आदेश का
पालन करो। दिखाने के लिए या लोगों को
खुश करने के लिए नहीं, लेकिन मन की
ईमानदारी से स्वर्गिक पिता का भय रखते
हुए, 23 जो भी तुम करते हो यह समझ कर
मन लगा कर यह जान कर करो, कि लोगों
के लिए नहीं परन्तु यीशु के लिए कर रह हो।
24 क्योंकि तुम यीशु मसीह की सेवा करते
हो, यह जान लो, कि तुम्हें मीरास का ईनाम
यीशु से ही मिलेगा। 25 किन्तु जो व्यक्ति
गलत करेगा, अपनी गलती के परिणाम को
भुगतेगा। परमेश्वर लोगों के साथ पक्षपात
नहीं करते हैं।

4 मालिको यह जानते हुए कि स्वर्ग में
तुम्हारे एक स्वामी हैं, अपने सेवकों को
सही मज़दूरी दो।
2 धन्यवाद के साथ प्रार्थना में पूरे मन से
लगे रहो। 3 हमारे लिए यह बिनती करना कि
मसीह के भेद और वचन के लिए परमेश्वर
एक द्वार खोलें। इसी वचन की सेवा के
कारण मैं कैदी हूँ। 4 ताकि जैसा वचन मुझे
देना चाहिए, मैं साफ़ तरीके से दे सकूँ।
5 समय का सही इस्तेमाल करते हुए बाहर
वालों के साथ, बुद्धिमानी के साथ बर्ताव
करें। 6 तुम्हारा बोलना सदैव मीठा हो, उसमें
दया भरी हो ताकि तुम यह जान सको कि
लोगों को कैसे जवाब दिया जाए।
7 मेरे विषय में तुखिकुस तुम्हें समाचार
देगा। मसीह में वह सज्जन भाई और मेरे साथ
काम करने वाला विश्वासयोग्य सेवक है।
8 मैंने इसी उद्देश्य से उसे तुम्हारे पास भेजा
है, कि तुम हमारा हाल चाल जान सको, और
वह तुम्हारी हिम्मत बढ़ा सके। 9 उनेसिमुस

विश्वसनीय और भला व्यक्ति है, उसे भी साथ में भेजा गया है और वह तुम्हीं में से है। ये लोग ही यहाँ पर होने वाली सभी बातों को बतलाएँगे।

10 अरस्तिखुस, मेरा संगी कैदी और मरकुस[a] जो बरनबास का भाई है, नमस्कार कहते हैं। मैंने बताया था कि यदि मरकुस तुम्हारे पास आता है, उसका स्वागत करो। 11 यीशु, जो यूस्तुस भी कहलाता है, तुम्हें सलाम कहता है। ये तीनों यहूदी मत से आए हैं, जिन्होंने स्वर्गिक पिता के राज्य के लिए ईमानदारी से मेहनत की है - वे ऐसे लोग हैं, जिन से मुझे तसल्ली मिलती है। 12 इपफ्रास भी जो तुम में से एक और मसीह का सेवक है, सलाम कहता है। वह सदा बड़ी लगन से प्रार्थना में मेहनत करता है, ताकि तुम परमेश्वर की इच्छा में पूरी तरह स्थिर बने रहो। 13 मैं इस बात का गवाह हूँ कि लौदीकिया और हियरापोलिस के लोगों लिए उसके पास बड़ी धुन है। 14 प्रिय चिकित्सक लूका और देमास तुम्हें नमस्कार कहते हैं। उन भाईयों को नमस्कार कहना 15 जो लौदीकिया में हैं और निम्फ़स के घर में मिलने वाली मण्डली को भी।

16 जब यह चिट्ठी तुम्हारे यहाँ पढ़ी जाए, तो यह भी ध्यान रखना कि लौदीकिया के चर्च में भी यह पढ़ी जाए और इसी तरह तुम लोग लौदीकिया को लिखे गए पत्र को पढ़ना।

17 अर्खिप्पुस से कहना, कि वह यीशु से मिली हुयी सेवा को पूरा करे।

18 यह अभिवादन मैं पौलुस स्वयं अपने हाथों से लिख रहा हूँ। मेरी जंजीरों को याद रखो। तुम पर दया बनी रहे। ऐसा ही हो।

---

[a] **4.10** जिस के बारे में तुम्हें बताया गया

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com